B-3
L-24
Indian Society

26/12/2023

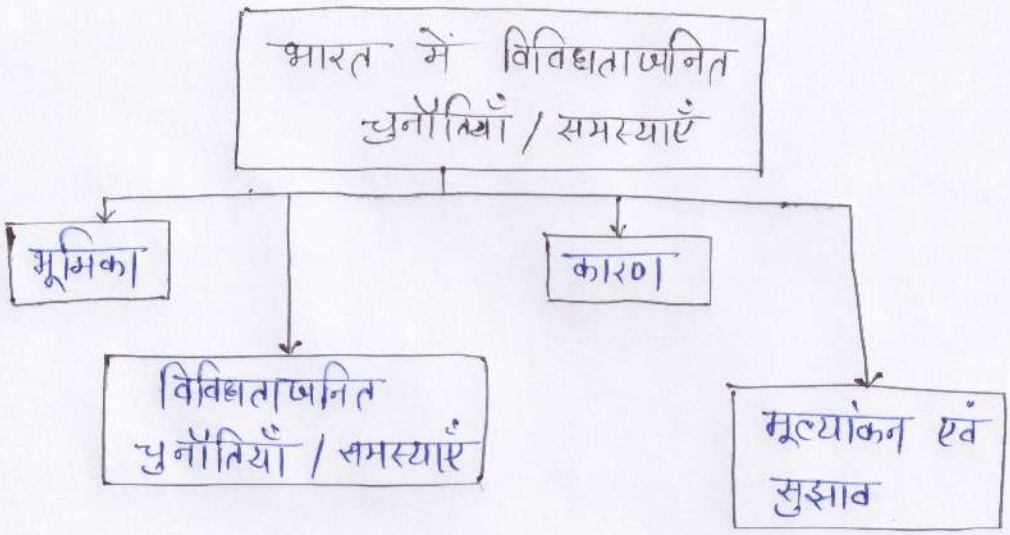

विविधताजनित चुनौतियाँ / समस्याएँ :-

⇩

1. नृजातीय विविधता (सांस्कृतिक विविधता और अनजातीय विविधता):

⇩

क्षेत्रवाद, अलगाववाद, बाहरी लोगों का विरोध आदि की समस्या

2. धार्मिक विविधता

⇩

साम्प्रदायवाद, धार्मिक संघर्ष, धार्मिक आतंकवाद आदि की समस्या

3. भाषाई विविधता.

⇩

भाषावाद तथा भाषाई पहचान को लेकर आंदोलन एवं संघर्ष आदि की समस्या

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

4. जातीय विविधता

⇩

जातिवाद तथा जाति संघर्ष एवं नरसंहार आदि की समस्या

5. प्रजातीय विविधता

⇩

प्रजातीय भेद-भाव एवं प्रजातीय आधार पर हिंसा एवं अलगाववाद आदि की समस्या

भारत में विविधताजनित समस्याओं के कारण

⇩

1. गरीबी, विषमता एवं वंचन
2. उपभोक्तावाद के साथ महत्वाकांक्षा में वृद्धि, प्रतिस्पर्धा में वृद्धि, तनाव में वृद्धि और व्यक्तिवादिता में वृद्धि
3. वैश्वीकरण जनित पहचान का संकट एवं नृजातीयता में वृद्धि
4. स्वार्थी व्यक्ति, स्वार्थी संगठन एवं स्वार्थी राजनीतिक दलों की भूमिका
5. विदेशी शक्तियों की भूमिका

KGS IAS KHAN GLOBAL STUDIES Most Trusted Learning Platform © KHAN SIR

मूल्यांकन एवं निष्कर्ष-

उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट है कि - उपरोक्त समस्याओं के लिए भारतीय समाज की विविधता नहीं, बल्कि अन्य कारण उत्तरदायी रहे हैं, जो विविधताओं के साथ संयुक्त होकर उपरोक्त समस्याओं को उत्पन्न करते रहे हैं।

इसलिए जरूरत है, उन अन्य कारणों को दूर करने की तभी विविधता में एकता के आदर्श के साथ एक विकसित समरस भारत का निर्माण किया जा सकता है।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

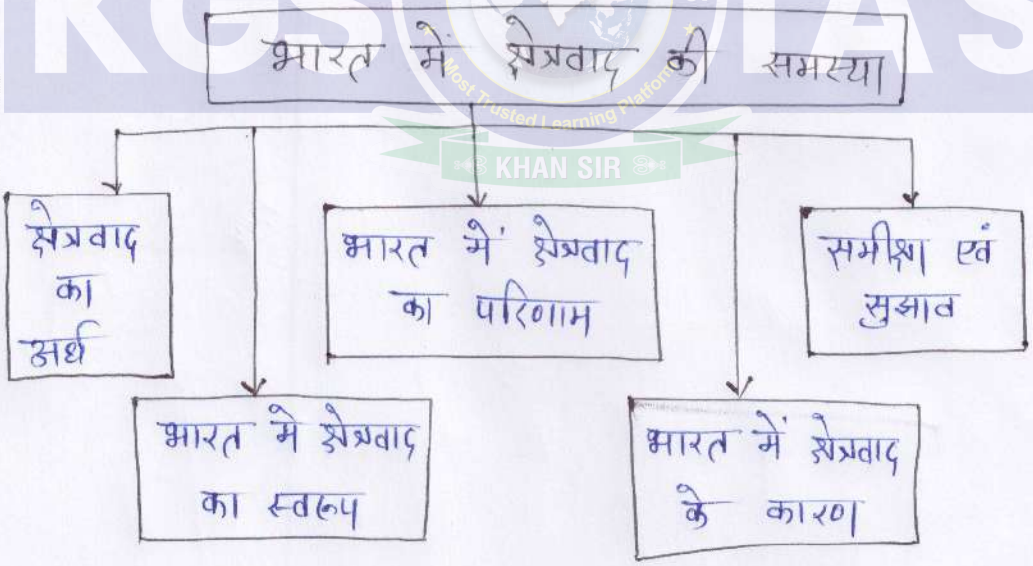

A. क्षेत्रवाद का अर्थ-

वृहद अर्थों में- किसी क्षेत्र विशेष के साथ वहां के लोगों में लगाव की भावना क्षेत्रवाद कहलाता है (क्षेत्रवाद का सकारात्मक संदर्भ)।

विशिष्ट अर्थों में- किसी क्षेत्र विशेष के साथ वहां के लोगों में अंध-लगाव की भावना, जहां लोग अपने क्षेत्र के हितों को राष्ट्रीय हितों से ऊपर मानने लगते हैं- क्षेत्रवाद कहलाता है

B. भारत में क्षेत्रवाद का स्वरूप

भारत में क्षेत्रवाद के उपरोक्त दोनो अर्थों के संदर्भ में कई रूप देखे जा सकते हैं जिनको तीन श्रेणियों में रखकर देखा जाता है-

1. बहुप्रादेशिक क्षेत्रवाद (Multistate Regionalism)

⇩

उदाहरण- दक्षिण भारत में हिंदी भाषा के विरोध में उत्पन्न क्षेत्रवाद

2. अन्तर-प्रादेशिक क्षेत्रवाद (Interstate Regionalism)-

⇩

उदाहरण- कावेरी जल विवाद को लेकर कर्नाटक और तमिलनाडु के बीच क्षेत्रवाद

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

8. अंतः प्रादेशिक क्षेत्रवाद (Intra state Regionalism)

⇓

उदाहरण - उत्तरप्रदेश में पूर्वांचल राज्य की मांग या बुन्देलखंड राज्य की मांग

⇓

क्षेत्रवाद के सकारात्मक और नकारात्मक दोनो संदर्भ के परिणामस्वरूप भारत में यह कई रूपों में अभिव्यक्त हुआ है - जैसे-

1. अलगाववाद के रूप में (उदाहरण - खालिस्तान की मांग, ग्रेटर नागालैण्ड की मांग आदि)
2. स्वायत्ता की मांग के रूप में (उदाहरण - 1974 में अकाली दल द्वारा आनंदसाहिब प्रस्ताव पारित करके पंजाब के लिये अधिक स्वायत्ता की मांग
3. पृथक राज्य की मांग के रूप में (उदाहरण - विदर्भ राज्य की मांग)
4. बाहरी लोगों का विरोध (उदाहरण - झारखंड में दिकुओं का विरोध या महाराष्ट्र में उत्तर-भारतीयों का विरोध)

KGS IAS KHAN GLOBAL STUDIES Most Trusted Learning Platform KHAN SIR

C. भारत में क्षेत्रवाद के परिणाम-

⇩

उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट है कि क्षेत्रवाद अपने सकारात्मक संदर्भ में शक्ति के विकेन्द्रीकरण द्वारा लोकतंत्र को मजबूती प्रदान करता है और कई रूपों में समाज के लिये प्रकार्यकारी (लाभकारी) होता है, लेकिन क्षेत्रवाद का नकारात्मक संदर्भ समाज को कई रूपों में दुष्प्रभावित करता है जिनको निम्न बिन्दुओं के तहत देखा जा सकता है-

⇩

1. राष्ट्रीय एकता एवं अखंडता को खतरा
2. प्यान - माल की हानि
3. आर्थिक विकास दुष्प्रभावित
4. सामूहिक सौहार्द्रता कमजोर
5. राष्ट्रवाद की भावना कमजोर
6. विधि व्यवस्था को चुनौती और अपराध में वृद्धि

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Platform
KHAN SIR

भारत में क्षेत्रवाद के कारण

⇩

1. नृजातीय विविधता (सहायक कारण)
2. गरीबी, बेरोजगारी एवं निरक्षरता

3. उपभोक्तावाद, महत्वाकांक्षा में वृद्धि, प्रतिस्पर्धा में वृद्धि, व्यक्तिवादिता में वृद्धि

4. वैयक्तिक विक्षमता एवं क्षेत्रीय विक्षमता एवं वंचन (Deprivation)

5. पहचान का संकट और नृजातीयता में वृद्धि

6. स्वार्थी व्यक्ति, स्वार्थी संगठन एवं स्वार्थी राजनीतिक दलों की भूमिका

7. विदेशी शक्तियों की भूमिका

समीक्षा एवं सुझाव

1. निश्चित रूप से क्षेत्रवाद के परिणाम सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों रहे हैं।

2. नृजातीय विविधता स्वयं में क्षेत्रवाद का कारण नहीं है बल्कि अन्य कारण अधिक महत्वपूर्ण रहे हैं।

3. क्षेत्रवाद की समस्या को दूर करने के लिए विविधता को समाप्त करना अव्यवहारिक एवं संविधान के विपरीत है।

4. इसलिए अन्य कारकों को दूर करके क्षेत्रवाद की समस्या का समाधान संभव किया जा सकता है। (सुझाव)

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Trusted Learning Platform
KHAN